भारतीय संगीत की अवधारणा

डॉ. (श्रीमती) रुचिरा बन्दोपाध्याय

संगीत की उत्पत्ति सामवेद से मानी जाती है। एक किवदन्ती के अनुसार संगीत की उत्पत्ति आरम्भ में वेदों के निर्माता ब्रह्मा द्वारा हुई। ब्रह्मा जी ने यह कला शिव को दी और शिव के द्वारा सरस्वती को प्राप्त हुई। सरस्वती को वीणा–पुस्तक धारिणी कहा गया और संगीत तथा साहित्य की अधिष्ठात्री माना गया। सरस्वती से संगीत कला नारद को प्राप्त हुई और इसी प्रकार ये कला शनैः– शनैः पृथ्वी पर आई। भारतीय परम्परा के अनुसार नटराज शिव नृत्य कला के आदि स्रोत हैं तथा भगवती सरस्वती गीत तथा वाद्य कला की प्रवर्तिका हैं। संगीत की गायन–वादन एवं नर्तन ये तीनों कलायें आदि काल से ही चली आ रही हैं। कहा जाता है कि ब्रह्मा ने एक अवनद्ध वाद्य का निर्माण किया जिसका ढाँचा मिट्टी का था, उसे ही मृदंग नाम दिया गया। शिव का सम्बन्ध डमरू से, कृष्ण का वंशी से, सरस्वती का वीणा से है। कहते है कि पार्वती की शयन मुद्रा को देखकर शिव ने रुद्रवीणा का निर्माण उनके अंग–प्रत्यंगों के आधार पर किया और पाँच रागों की उत्पत्ति अपने पाँच मुखों द्वारा की। शिव के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और आकाशोन्मुख होने से क्रमशः भैरव, हिन्डोल, मेघ, दीपक और श्री राग प्रकट हुये एवं पार्वती द्वारा कौशिक राग की उत्पत्ति हुई। शिव प्रदोष स्तोत्र में लिखा है कि त्रिजगत की जननी गौरी को स्वर्ण सिंहासन पर बैठाकर शूलपाणि शिव ने प्रदोष के समय नृत्य करने की इच्छा प्रकट की। इस अवसर पर सब देवता उन्हें घेरकर खड़े हो गये और उनका स्तुति गान करने लगे।सरस्वती ने वीणा, इन्द्र तथा ब्रह्मा ने करताल और भगवान विष्णु ने मृदंग बजाया। लक्ष्मी ने गायन आरम्भ कर दिया। तात्पर्य है कि सृष्टि के प्रारम्भ से ही संगीत के तीनों अंगो गायन, वादन तथा नर्तन का प्रमाण मिलता है।